International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मध्यमवर्ग

Rakesh Kumar
M. Phil Scholar
Department of history
MDU Rohtak
Email : rakeshinsan786@gmail.com

सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह समूहों में रहना पसंद करता है और जीवनयापन के लिए परिश्रम करता है। अपने परिश्रम के बल पर वह धनार्जन कर धनवान, शक्ति प्रदर्शन कर शासक तक बन जाता है। इस तरह समाज में वर्ग भिन्नता आ जाती है। मध्यकाल में भी यह भिन्नता कायम थी। उस काल में भी शासक वर्ग, उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग थे। जिनके अपने–अपने जीवनयापन के तरीके थे। इस शोध–पत्र में हम मध्यकाल के मध्यमवर्ग के जीवनस्तर, उनके खान–पान, सामाजिक स्तर को दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : *शासक वर्ग, निम्न वर्ग, जनसाधारण, होली, ईद–उल–जुहा, त्यौहार*

प्रस्तावना

मध्ययुग में उच्च वर्ग (शासक वर्ग) के बाद मध्यम वर्गीय समाज ही ऐसा समाज था, जिसकी आर्थिक स्थिति ठीक थी। उनकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। समाज में उनका मान भी कम नहीं था। यह वर्ग शासक वर्ग और जनसाधारण के बीच एक कड़ी के रूप में था। बहुत से तो अमीर भी इनकी तुलना में परेशान से रहते थे। कारण यह था कि एक तो उन्हे अपने जीवन–स्तर को बनाये रखने, बिलासिलापूर्ण जीवन निर्वाह में ही काफी खर्च करना पड़ता था एवं दूसरे उन्हें शासक वर्ग के लिए समय–समय पर मूल्यवान उपहार देने की औपचारिकता का निर्वाह करना पड़ता था। इस प्रकार अमीर कभी–कभी तो कर्ज से भी दब जाते थे। इस संबंध में बर्नियर ने लिखा है 'बहुत ही थोड़े धनवान अमीरों से मेरी जान–पहचान थी, इसके विपरीत उनमें से अधिकांशतया बहुत ऋणग्रस्त थे, बादशाहों के मूल्यवान उपहारों और अपने कर्मचारियों के कारण विनाश को पहुंच गए।[1]

इस मध्यम वर्ग में व्यापारी, व्यवसायी, सरकारी कर्मचारी या लेखन कार्य करने वाले आते थे। जैसा कि डॉ. युसूफ हुसैन ने लिखा है 'मध्य श्रेणी के लोगों की स्थिति के संबंध में हमारी जानकारी बहुत न्यून है। इस वर्ग में व्यापारी, व्यवसायी और सरकारी कर्मचारियों या लेखक वर्ग जैसा उन्हें कहा जाता था, सम्मिलित थे। समुद्र तट पर रहने वाले व्यापारियों और सौदागरों का जीवन–स्तर निश्चित रूप से उन लोगों से ऊँचा था जो देश के भीतरी भू–क्षेत्र में रहते थे, जिसका कारण यह था कि उन्हें दूसरे देशों के लोगों के सम्पर्क में आना पड़ता था और अन्तर्राष्ट्रीय आराम और सुविधा का उन्हें अनुकरण करना पड़ता था।[2]

मध्य वर्ग के पास खूब सम्पत्ति थी। व्यापारी लोग जनसाधारण के आदर के पात्र होते थे। मध्यम वर्ग के व्यक्तियों का जीवन स्तर शासक से नीचा था। यह वर्ग शासक वर्ग का मुकाबला नहीं कर सकता था। ये लोग न तो शासक वर्ग की तरह आडम्बर–प्रिय होते थे और न उतने खर्चीजे ही। उनका व्यय अपने व्यवसाय के अनुकूल था। वे सरकारी कर्मचारियों के भय के कारण अधिक शान–शौकत से नहीं रह पाते थे। उन बेचारों को डर रहता था कि गर्वनर आदि उनका धन छीन न लें। वे इतने धनवान होते थे। हैरी तथा बर्नियर विद्वानों के मतानुसार व्यापारी वर्ग बहुत ही मितव्ययी और निर्धनों का सा जीवन व्यतीत करता था। मध्यम वर्गीय सरकारी कर्मचारियों का जीवन भी बहुत सम्पन्न नहीं था। मोरलैण्ड की ऐसी मान्यता है।[3]

सल्तनत काल में अनेक उद्योग–धन्धों की स्थापना हो चुकी थी। इनमें से कुछ तो राज्य द्वारा चलाए जाते थे और कुछ व्यक्तिगत रूप से उद्योगपतियों द्वारा। इन व्यापारियों का कारोबार अच्छी तरह चलता था। डॉ. युसूफ हुसैन ने लिखा है कि, 'गुजरात के बनिए भारत के समस्त समुद्र तट पर व्यापार करते थे और अरबिया तथा फारस तक से उनके व्यापारिक संबंध थे। उनमें अनेक पूंजीपति व्यापारी थे। उदाहरणार्थ वीरजी बोहरा सम्पूर्ण सूरत और मालाबार के तट पर अधिकतर व्यापार नियन्त्रण करता था। गोलकुण्डा, आगरा, बुरहानपुर में उसने अपने कार्यालय स्थापित कर रखे थे तथा फारस की खाड़ी और अनेक हिन्दुस्तानी द्वीपों से वह व्यापार करता था।[4] व्यापारियों की आर्थिक दशा सुधारने में दलाल लोगों का

भी योगदान था। विद्वान् मैनरिक्यू के अनुसार पटना में ही छः सौ दलाल थे। ये सभी धनवान थे। इनके सहयोग से व्यापारियों का कारोबार बहुत अच्छा चलता था। मैनरिक्यू ने वर्णन किया है कि आगरे के व्यापारी इतने धनवान थे कि उनके यहाँ रूपया अनाज की बोरियों की तरह भरा रहता था। ढाका में तो रूपये गिने नहीं जाते थे, उनका वजन कर लिया जाता था। व्यापारियों के बड़े–बड़े काफिले एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया करते थे। राजपूताने में बंजारे सामान लादने के लिए ऊंटों का प्रयोग करते थे। यों तो बैलों को भी माल ढोने के काम में लिया जाता था। कर्नल टॉड के अनुसार व्यापारियों के काफिलों में कभी–कभी 40,000 तक बैल सामान ढोने के काम में लिए जाते थे।[5]

मुगलकाल में मध्यम वर्ग के लिए आर्थिक विकास की सुविधाएं उपलब्ध थी। उस समय आने–जाने वालों की सुरक्षा के लिए सड़कों पर व्यवस्था रहती थी। व्यापारियों की रक्षा के लिए रक्षक दल होते थे। प्रान्तों के बीच के मार्गों में व्यापारियों के लिए विश्राम–गृह और कुंए होते थे। मुगलकाल में मध्यम वर्ग और निम्नवर्ग के बीच बहुत अन्तर पाया जाता था। पाण्डेय के अनुसार इस युग में अमीरों तथा गरीबों का पारस्परिक भेद पहले से अधिक बढ़ गया। इस समय के धनी पहले से अधिक धनी थे और वे उस धन का उपयोग करने में पहले से अधिक स्वार्थी थे। निर्धन पहले से अधिक निर्धन हो गए ओर साधारणतः उनकी स्थिति अध्का असहाय हो गई। सम्राट शाहजहां तथा औरंगजेब के समय में उन पर करों का भार और बढ़ गया और उस समय तक स्थानीय कर्मचारी अत्याचार करने की विधियों में अधिक दक्षता प्राप्त कर गए इसलिए उनका संकट ओर भी अधिक बढ़ गया। औरंगजेब के शासनकाल में मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग दोनों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आ गई थी। इसका कारण यह था कि औरंगजेब का बहुत सा समय युद्धों में बर्बाद हुआ था। चनता की खुशहाली के लिए उसे कम समय मिला। सर जदुनाथ सरकार ने इस संबंध में ठीक ही लिखा है 'इस प्रकार भारत की आर्थिक दशा का महान् पतन आरम्भ हो गया। इस काल में राष्ट्रीय सम्पत्ति की ही

अवनति नहीं हई, अपितु यान्त्रिक निपुरणता और सभ्यता का भी पतन हो गया तथा कला और संस्कृति के तो दूर–दूर तक दर्शन दुर्लभ हो गए।[6]

मध्यम वर्गीय जनता भोजन में चावल, चपाती और विभिन्न प्रकार की सब्जियां लेती थी। चूड़ियां विशेष अवसरों पर बनाई जाती थीं। इनके अतिरिक्त दूध के सामान आर्थिक स्थिति के अनुसार प्रयोग में लिए जाते थे। मुसलमान लोग मांस का उपयोग करते थे परन्तु हिन्दुओं में मुख्यतः राजपूत लोग ही मांस का उपयोग करते थे। मध्यमवर्गीय लोगों में भी बहुत से व्यक्ति शराब पीते थे।

निष्कर्ष :

इस हम अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि मध्यमकाल के लोगों का जीवन स्तर विभिन्नताओं से भरा हुआ था। शासक वर्ग का जीवन अत्यधिक शान–शौकत का जीवन था। व्यापारी वर्ग बहुत ही मितव्ययी और निर्धनों का सा जीवन व्यतीत करता था वे सरकारी कर्मचारियों के भय के कारण अधिक शान–शौकत से नहीं रह पाते थे। औरंगजेब के शासनकाल में मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग दोनों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आ गई थी। जनसाधारण शासक वर्ग की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था। इस काल में भारत की आर्थिक दशा का महान् पतन आरम्भ हो गया था।

सन्दर्भ

[1] बर्नियर, ट्रेवलस इन द मुगल एम्पायर, पृ. 138
[2] हुसैन युसूफ, गलीक्पस ऑफ मिडिवल इण्डियन कल्चर, बम्बई, 1959, पृ. 97
[3] परमात्माशरण, मध्यकालीन भारत, नन्द किशोर ब्रदर्स, बनारस, 1950, पृ. 107
[4] हुसैन युसुफ, वही, पृ. 137
[5] मैनरिक्यू, भाग–2, पृ. 238
[6] सरकार, जदूनाथ, हिस्ट्री ऑफ औरंजगजेब, पृ. 238